केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा अपना 41वाँ स्थापना दिवस आयोजित

आज, दिनांक 18 अगस्त, 2010 को केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा अपना 41वाँ स्थापना दिवस मनाया गया इस अवसर पर सभी वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक एव सहायक कर्मचारी उपस्थित थे । स्थापना दिवस के अवसर पर डा॰ बी॰ मिश्र, उपकुलपति शेरे कश्मीर कृषि विश्वविद्यालय, जम्मु मुख्य अतिथि रहे तथा संस्थान के निदेशक डा॰ एस॰ के॰ गुप्ता ने समारोह की अध्यक्षता की ।

संयोजन समिति के अध्यक्ष एवं संस्थान के फसल सुधार विभाग के अध्यक्ष डा॰ एस॰ के॰ शर्मा ने समारोह के मुख्य अतिथि, बाहर से आए अतिथियों तथा प्रेस एवं मीडिया का संस्थान आगमन पर स्वागत किया तथा संस्थान की गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि संस्थान द्वारा लवणग्रस्त मृदाओं के सुधार एवं निम्न गुणवत्ता वाले पानी का कृषि में उपयोग से अच्छी उपज लेने के लिए संवर्धन अभ्यास किए गए हैं ।

स्थापना दिवस के मुख्य अतिथि एवं शेरे कश्मीर कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा॰ बी॰ मिश्र ने अपने व्याख्यान में धान–गेहूँ फसल चक्र प्रणाली के लिए धान एवं गेहूँ पर किए जा रहे अनुसंधान कार्यो की समीक्षा की । मुख्य अतिथि ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसान की सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार एवं प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित रखते हुए ही अनुसंधान करें ताकि देश की कृषि पैदावार अधिक टिकाऊ हो । फसल सुधार विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि खाद्य सुरक्षा में स्थिरता के लिए कृषि पैदावार, उत्पादकता और मुनाफा बढ़ाना जरूरी है खेती को उद्योग से जोड़ने से ग्रामीण इलाकों में औद्योगिक विकास को आधार और कृषि सम्बन्धित व्यापार को बढावा मिलेगा । किसानों को उपभोक्ताओं से सीधे जोडने की कारगर व्यवस्था करके कृषकों के मुनाफा को बढ़ाया जा सकता है । डा॰ मिश्र ने किसानों को वैज्ञानिक ढंग से खेती करने, खेती में रासायनिक खादों की बजाय जैविक खादों के अधिक उपयोग, धान–गेहूँ में कम पानी की माँग वाली तकनीकियाँ आदि अपनाने का आह्वान किया । डा॰ मिश्र ने कृषि उत्पादन की गुणवत्ता में वृद्धि करने और उत्पादन के साथ कृषि उत्पादों की प्रोसेसिंग तथा मार्किटिंग के लिए काम करने की आवश्यकता पर भी बल दिया ताकि किसानों को अपनी उपज का सही मूल्य मिल सके । मुख्य अतिथि ने दिनों–दिन बढ़ रही प्रतिहैक्टर लागत को कम करके, पैदावार बढ़ाना वैज्ञानिकों और किसानों के सामने एक चुनौती बताया । अन्त में उन्होंने खुशी जाहिर की यह संस्थान किसानों के प्रति जागरूक है और वैज्ञानिक सकारात्मक अनुसंधान कर रहे हैं।

डा॰ गुप्ता ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष लगभग 45 हजार हैक्टर लवणग्रस्त मृदाओं को सुधारा जा रहा है इस प्रकार देश में कुल 18 लाख हैक्टेयर जिसमें पंजाब में 8 लाख हरियाणा में 3 लाख तथा उत्तर प्रदेश में 7 लाख लवणग्रस्त भूमियों को अभी तक सुधारा जा चुका है। इन भूमियों के सुधार से देश में प्रतिवर्ष लगभग 12.5 से 15 मिलियन टन अतिरिक्त खाद्यान का उत्पादन हो रहा है तथा काफी अधिक रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए है । संस्थान द्वारा निकाली गई तकनीक द्वारा लाखों किसान लाभान्वित हो रहे हैं फलस्वरूप वें एक अच्छा समृद्ध जीवनयापन करने के लिए सक्ष्म हुए हैं। डा॰ गुप्ता ने देश की खाद्यान उत्पादकता पर संक्षिप्त टिप्पणी करते हुए कहा कि हमारे देश में वर्ष 1950–51 में लगभग 50 मिलियन टन खाद्यान हुआ करता था लेकिन वैज्ञानिकों, सरकार और प्रगतिशील किसानों के अथक प्रयास से उत्पादकता

बढ़कर वर्ष 2007–08 में लगभग 231 मिलियन टन हो गई है । परन्तु देश की बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए वर्ष 2025 तक हमें 375 मिलियन टन खाद्यान की आवश्यकता होगी जिसको पूरा करने के लिए देश को लवण ग्रस्त मृदाओं के सुधार पर बल देना होगा निदेशक ने लवणग्रस्त मृदाओं के सुधार हेतु संस्थान द्वारा निकाली गई तकनीकों जैसे–उप–सतही जल निकास प्रणाली, जिप्सम तथा लवण सहनशील फसल आधारित तकनीक, निम्न गुणवत्ता वाले पानी का कृषि में उपयोग, भू–जल स्तर बचाने हेतु भू–जल रिचार्ज तन्त्र, संस्थान द्वारा निकाली गई धान, गेहूँ, सरसों व चने की 14 लवणसहनशील प्रजातियाँ, बायो डीजल व बायो एनर्जी उत्पादन, बायो ड्रेनेज तकनीक व संस्थान में की जा रही बहुउद्देशीय खेती आदि पर प्रकाश भी डाला । अन्त में डा॰ गुप्ता ने मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि बहुत ही कम समय होने के बावजूद वे इस व्याख्यान माला के लिए तैयार हो गए ।

स्थापना दिवस समारोह में मंच संचालन संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डा• पी• सी• शर्मा द्वारा किया गया तथा प्रधान वैज्ञानिक डा• प्रदीप डे द्वारा मुख्य अतिथि, आगुन्तकों एवं प्रेस मीडिया का धन्यवाद किया गया ।

Glimpses of Institute Foundation Day